विज्ञान वर्ग के शहरी एवं ग्रामीण छात्रों की पर्यावरणीय प्रदूषण के प्रति जागरूकता का अध्ययन

Dr. Ashok Kumar, Assistant Professor, Vivekananda College of Education, Johlaka Sohna, Gurugram

शोध सार

प्रस्तुत शोध प्रपत्र में विज्ञान वर्ग के शहरी एवं ग्रामीण छात्रों की पर्यावरणीय प्रदूषण के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन हेतु शून्य परिकल्पना "विज्ञान वर्ग के शहरी एवं ग्रामीण छात्रों की पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" का निर्माण किया । शोधकर्ता ने आकस्मिक न्यादर्शन विधि द्वारा न्यादर्श का चयन तथा प्रदत्त संकलन हेतु सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया एवं स्वनिर्मित उपकरण माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों हेतु पर्यावरण शिक्षा सम्बन्धी अभिमत मापनी का प्रयोग किया । निष्कर्ष रुप में यह पाया गया कि विज्ञान वर्ग के शहरी एवं ग्रामीण छात्रों की पर्यावरणीय प्रदूषण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

मुख्य शब्दावलीः विज्ञान वर्ग, शहरी एवं ग्रामीण छात्र, पर्यावरणीय प्रदूषण, जागरूकता

प्रस्तावना

पर्यावरण शिक्षा वह शिक्षा है जो पर्यावरणीय घटकों का विस्तृत ज्ञान, पर्यावरण तथा मानव के मध्य अन्तर्सम्बन्धों एवं पारस्परिक निर्भरता का ज्ञान और पर्यावरण के प्रति संचेतना का विकास कर पर्यावरण संरक्षण की अभिवृत्ति व कौशल का विकास करती है (गुप्ता और सिंह, 2009)। पर्यावरण शिक्षा यह सिखाने के सुनियोजित प्रयास की ओर संकेत करती है कि किस प्रकार मनुष्य चिरस्थायी अस्तित्व के लिये स्वाभाविक वातावरण की क्रियाओं और विशेषतः अपने व्यवहार और पारिस्थितिक तन्त्र में सामंजस्य स्थापित कर सकता है। पर्यावरण शिक्षा का प्रयोग प्रायः विद्यालय प्रणाली के अन्तर्गत प्राथमिक से लेकर माध्यमिक शिक्षा के बाद तक दी जाने वाली शिक्षा की ओर संकेत करने के लिये किया जाता है (विकीपीडिया, 2014)। अन्तर्राष्ट्रीय प्रकृति एवं प्राकृतिक स्रोत संरक्षण परिषद् के नेवादा सम्मेलन में पर्यावरण शिक्षा की व्याख्या करते हुये कहा गया है कि पर्यावरण शिक्षा वह शिक्षा प्रक्रिया है जिसके द्वारा मानव अपनी संस्कृति तथा जैव भौतिक परिवेश के बीच पारस्परिक सम्बन्धों की समझ तथा शोधों का विकास, सम्प्रत्ययों का स्पष्टीकरण, कुशलताओं और अभिवृत्तियों का विकास करता है। यह शिक्षा व्यक्ति की निर्णय प्रक्रिया एवं व्यवहार संहिता में भी अपेक्षित परिवर्तन लाती है मौजूदा ज्ञान और पर्यावरण से सम्बन्धित कार्यक्रमों के अभ्यास में भागीदारी पर्यावरण शिक्षा की विषयवस्तु को विद्यार्थियों के स्थानीय परिवेश से जोड़कर मॉड्यूल्स द्वारा इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है वे कि सूचनायें खोजने के लिये प्रेरित हों।

परिवर्तित परिप्रेक्ष्य में शिक्षकों का दायित्व है कि वे विद्यार्थियों को इस प्रकार प्रेरित करें कि रचनावाद के सिद्धान्तों के आधार पर पाठ्यसामग्री के प्रस्तुतीकरण से विद्यार्थी दी गयी जानकारी को अपने अनुभवों से जोड़ पायें और उन्हें अपने व्यक्तिगत अनुभव व्यक्त करने के अवसर भी प्राप्त हों तथा उपयुक्त क्रियाकलाप के अवसर भी उपलब्ध हों। पर्यावरण से सम्बन्धित खेल, कविता, कहानी आदि के द्वारा शिक्षा को रोचक बनाया जा सकता है। विद्यार्थियों से उनके अनुभव लिखवाये भी जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे कार्य भी दिये जा सकते हैं जिन्हें विद्यार्थी व्यक्तिगत के साथ–साथ सामूहिक रूप में भी कर सकें। इस प्रकार विशेष सावधानीयुक्त निर्मित मॉड्यूल्स के अध्ययन द्वारा विद्यार्थी अधिगम–प्रक्रिया में सहभागी बन सकेंगे और पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य प्राप्त करने में समर्थ हो पायेंगे।

समस्या कथन

"विज्ञान वर्ग के शहरी एवं ग्रामीण छात्रों की पर्यावरणीय प्रदूषण के प्रति जागरूकता का अध्ययन"।

शोध के उद्देश्य

विज्ञान वर्ग के शहरी एवं ग्रामीण छात्रों की पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

विज्ञान वर्ग के शहरी एवं ग्रामीण छात्रों की पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा **सर्वेक्षण विधि** का उपयोग किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श चयन हेतु **आकस्मिक न्यादर्शन विधि** का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित उपकरण **माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों हेतु पर्यावरण शिक्षा सम्बन्धी अभिमत मापनी** का प्रयोग किया गया है।

विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधकर्ता द्वारा यह उद्देश्य निर्धारित किया गया कि '' विज्ञान वर्ग के शहरी एवं ग्रामीण छात्रों की पर्यावरणीय प्रदूषण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।'' इस उद्देश्य के अध्ययन हेतु शून्य परिकल्पना बनायी गई कि विज्ञान वर्ग के शहरी एवं ग्रामीण छात्रों की पर्यावरणीय प्रदूषण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है जिसके विश्लेषण हेतु निम्नलिखित सारणी तैयार हुई–

सारणी

समूह	संख्या	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	मानक त्रुटि	सी0आर0 मूल्य
शहरी छात्र	150	41.75	36.70	4.6	0.83
ग्रामीण छात्र	150	37.90	24.30		

df (198) at 0.05 level of significance is equal 1.96

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि शहरी छात्रों का पर्यावरणीय जागरूकता के मध्यमान अंक 41.75 और मानक विचलन 39.70 है जबकि ग्रामीण छात्रों का मध्यमान अंक 37.90 और मानक विचलन 24.30 है जिनसे अभिकलित मानक त्रुटि 4.6 तथा सी0आर0 मूल्य 0.83 प्राप्त हुआ जो df (198) के 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.96 से बहुत कम है जिसके आधार पर बनायी गई शून्य परिकल्पना स्थापित हो जाती है।

अतः यह परिणाम प्राप्त होता है कि विज्ञान वर्ग के शहरी एवं ग्रामीण छात्रों की पर्यावरणीय प्रदूषण के प्रति जागरूकता समान स्तर की होती है। इसका प्रमुख कारण यह है कि सभी लोग पर्यावरणीय समस्याओं से परिचित है जो वर्तमान समय की ज्वलन्त समस्या है। प्रस्तुत अध्ययन का समर्थन प्रहराज बी (1971) का अध्ययन करता है।

निष्कर्ष

अतः निष्कर्ष रुप में यह कहा जा सकता है कि विज्ञान वर्ग के शहरी एवं ग्रामीण छात्रों की पर्यावरणीय प्रदूषण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सन्दर्भ

- पाण्डेय, के पी. : नवीन शिक्षा मनोविज्ञान, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी,
- पाल, हंसराज : प्रगत शिक्षा मनोविज्ञान, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 2006 स्टीफन्स, जे. एम. : शिक्षा मनोविज्ञान, हरियाणा ग्रन्थ अकादमी, प्रथम हिन्दी संस्करण, 1972
- त्रिपाठी, जयगोपाल : मनोवैज्ञानिक अनुसंधान पद्धतियॉ, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, 1994
- Krajhanzl, J. (2010). Environmental and proenvironmental behavior. School andϖ Health, 21, 251-274.
- Krosnick, J. A., Holbrook, A. L.,ϖ & Visser, P. S. (2000). The impact of the fall 1997 debate about global warming on American public opinion. Public Understanding of Science, 9(3), 239-260.
- Kuhlemeier, H., Van Den Bergh, H.,ϖ & Lagerweij, N. (1999). Environmental knowledge, attitudes, and behavior in Dutch secondary education. The Journal of Environmental Education, 30(2), 4-14.
- Lahiri, S. (2011). Assessing the environmental attitude among pupil teachers inϖ relation to responsible environmental behavior: A leap towards sustainable development. Journal of Social Sciences, 7(1), 33.
- Larijani, M.,ϖ & Yeshodhara, K. (2008). An empirical study of environmental attitude among higher primary school teachers of India and Iran. Journal of human ecology, 24(3), 195-200. 264